झूला झुले राधा नंद किशोर | By Lakhbir Singh Lakha |

सावन का महीना घटाए घनघोर,
आज कदम्ब की डाली,
झुले राधा नंद किशोर।

प्रेम हिंडोले बैठे श्याम बिहारी,
झूला झुलाये सारी ब्रज की नारी,
जोड़ी लागे प्यारी जैसे चंदा और चकोर,
आज कदम्ब की डाली,
झुले राधा नंद किशोर।
सावन का महीना घटाए घनघोर...

ठंडी फुहार पड़े, मन को लुभाये,
गीत गावें सखियाँ, श्याम मुस्काये,
बांसुरिया बजाये मेरे मन का चितचोर,
आज कदम्ब की डाली,
झुले राधा नंद किशोर।
सावन का महीना घटाए घनघोर...

जमुना के तट पर नाचे रे ता-ता-थैया,
राधा को झुलाए श्याम, रास रचैया,
ब्रज में छायी मस्ती और मस्त हुए मनमोर,
आज कदम्ब की डाली,
झुले राधा नंद किशोर।
सावन का महीना घटाए घनघोर...

देख युगल छवि, मन में समाई,
'श्यामसुन्दर' ने महिमा गाई,
देख के प्यारी जोड़ी, मनवा हुआ विभोर,
आज कदम्ब की डाली,
झुले राधा नंद किशोर।
सावन का महीना घटाए घनघोर...

सावन का महीना घटाए घनघोर,
आज कदम्ब की डाली,
झुले राधा नंद किशोर।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%9d%e0%a5%82%e0%a4%b2%e0%a4%be-%e0%a4%9d%e0%a5%81%e0%a4%b2%e0%a5%87-%e0%a4%b0%e0%a4%be%e0%a4%a7%e0%a4%be-%e0%a4%a8%e0%a4%82%e0%a4%a6-%e0%a4%95%e0%a4%bf%e0%a4%b6%e0%a5%8b%e0%a4%b0-by-lakhbir-si/